वादी-संवादी स्वर से गायन-समय का निर्धारण

सप्तक को दो भागों में बाँटा गया :- उत्तरांग और पूर्वांग। संख्या की दृष्टि से सा, रे, ग, म पूर्वांग में और प, ध, नि, सां उत्तरांग में आते हैं। सर्वप्रथम शास्त्रकारों ने यह नियम बनाया होगा कि जिन रागों का वादी स्वर सा, रे, ग, म स्वरों में से हो, उनका गायन-समय दिन के पहले हिस्से अर्थात 12 बजे दिन से 12 बजे रात्रि के भीतर और जिन रागों का वादी स्वर प, ध, नि और सां में से हो, उनका गायन समय दिन के दूसरे हिस्से अर्थात 12 बजे रात्रि से 12 बजे दिन के भीतर होना चाहिये।

उपर्युक्त नियम बनाने के बाद हमारे शास्त्रकारों ने कुछ अपवाद भी पाये होंगे। अतः उन्हें इस नियम में संशोधन करना आवश्यक हो गया होगा। उदाहरणार्थ भीमपलासी राग में वादी मध्यम और संवादी षडज है। सप्तक का पूर्वांग 'सा' से 'म' तक मानने से वादी-संवादी दोनों सप्तक के पूर्वांग में आ जाते हैं, किन्तु यह उचित नहीं। राग का दूसरा नियम यह भी है, अगर वादी स्वर सप्तक के पूर्व अंग से है तो संवादी स्वर उत्तर अंग से होगा। इस दृष्टि से भीमपलासी और मारवा राग इस नियम के प्रतिकूल हैं। दोनों रागों में वादी म और

Scanned with CamScanner

~~और संवा~~ और संवादी 'सा' है। उपर्युक्त नियमानुसार भैरवी भी भीमपलासी के समान पूर्वांग प्रधान राग होना चाहिये, और इसका गायन समय 12 बजे दिन से 12 बजे रात्रि के भीतर किसी समय होना चाहिये, किन्तु हम जानते हैं कि भैरवी प्रातःकालीन राग है। ठीक इसी प्रकार की कठिनाई अनेक रागों में मिलती है। इस कठिनाई को दूर करने के लिये उपर्युक्त नियम में यह संशोधन किया गया कि सप्तक के दोनों अंगों का क्षेत्र बढ़ा दिया गया। पूर्वांग में सा से प तक तथा उत्तरांग में म से सां तक माना गया। इससे यह लाभ हुआ कि जिन रागों में साम अथवा म सा वादी-संवादी हैं उनका एक स्वर पूर्वांग एक स्वर उत्तरांग में माना गया। वादी-संवादी दोनों सप्तक के एक हिस्से से नहीं होना चाहिये। राग का यह नियम है कि वादी स्वर सप्तक के पूर्वांग में आता है तो उसका गायन-समय दिन के पूर्व भाग में होगा और अगर उत्तरांग में आता है तो उसका गायन-समय दिन के उत्तर भाग में होगा।

Scanned with CamScanner